वेदों की खुशबू

ओ३म्

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 69	Year 6	Volume 19	March 2018 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

जिन्दगी जिन्दादिल्ली का नाम है

21 साल की उम्र में डाक्टरों ने ऐलान कर दिया था कि महान वैज्ञानिक हाकिंग अधिक से अधिक 5 साल जियेंगें परन्तु अपने मनोबल की शक्ति से वे 76 साल की आयु में अलविदा कह कर गये। डनका कहना थ––क्योंकि मैं यह सोच कर चला कि जो भी मुझे समय मिला है वह तो बोनस है।

हाकिंग जिन्होने अल्बर्ट आईस्टीन और न्यूटन जैसे वैज्ञानिको की महानता को छूआ, कितने महान थे उसका अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनकी पुस्तक ––ए ब्रीफ हिस्टरी आफ टाईम की एक करोड़ से अधिक कापियां विश्व के हर देश में बिकी और 40 भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ।

आईये जाने उनकी कही कुछ बातों को जो हमारे जीवन को कुछ नई दिशा दे सकती है।

जिन्दगी कितली ही बुरी क्यों न हो , सफल होने के लिये आपके पास हमेशा कुछ होता है

उनका जीवन पढ़ने के बाद आत्महत्या का मन बना चुका व्यक्ति अपना निर्णय बदल देगा।

ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं जो कहते हैं हम डिपरैशन depression के दौर से गुजर रहें हैं। उन्हें दवाई देने की बजायें या फिर डाक्टर को दिखाने की बजाये, उनका जीवन पढ़ा दें।

कुछ बिमारी से ग्रस्त होने के बाद जो हर किसी के आगे अपनी बिमारी का गाना अलापना शुरू कर देते है और दूसरों का भी मूड खराब करतें हैं, वे उनका जीवन पढ़े।

स्टीफन हाकिंग जहां अपंगता पर विजय हासिल की, जो दूसरी और सकरात्मक नजरिये का प्रतीक बने रहे।

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

यदि आप भी अपना नजरिया सकरात्मक करना चाहते हैं तो स्टीफन हाकिंग का जीवन पढ़े।

जब स्टीफन हाकिंग से यह पूछा गया कि लाइलाज बीमारी सं ग्रस्त होने पर आप कैसा अनुभव करते है, उनका जवाब था––––– मैं इस बात पर जयादा ध्यान ही नहीं देता। जहां तक सम्भव हो सामान्य जीवन जीने की कोशिश करता हूं। मुझे कभी इस बात का अफसोस नहीं हुआ कि इसकी बजह से मैं सामान्य मनुष्यों जैसी बहुत सारी चीजें नहीं कर पाता हूं।

मैं मौत से नहीं डरता, लेकिन मुझे मरने की कोई जल्दी भी नहीं। मेरे पास पहले से ही करने के लिये बहुत कुछ है ।

सचमुच एक नई सोच––––मौत से डरें न, क्योंकि मौत तो आनी ही है। परन्तु अपने पास इतने उदेश्य रखें कि मरने की कोई जल्दी भी न हों।

हमेशा उपर देखें, तारों की तरफ, अपने पैरों की तरफ नीचे नही । काम करना कभी बन्द न करें। काम ही आपको अर्थ और उदेश्य देता है, जिनके बिना जीवन रिक्त है

अगर आपको किसी का प्रेम मिला है तो उसे सहज कर रखें, नकारिये नहीं। सदैव यह सोच रखें––––मैं खुश नसीब हूं, मुझ को किसी का प्यार मिला।

The greatest enemy of knowledge is not ignorance, it is the illusion of knowledge.

कोशिश करने वालों को हार नहीं होती ।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।।

कुछ हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती।

कुछ किये बिना जय–जय कार नहीं होती।।

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

संघर्ष बुरी चीज नहीं है।

संघर्ष बुरी चीज नहीं है। जब तक संघर्ष नही तो हम मेहनत भी नहीं करते। अगर आपके जीवन में संघर्ष नहीं भी है तो भी इसे ढूंढें। इसके दो फायदे हैं, पहला जो जीवन में नहीं सीखा वह संघर्ष का ऐक दौर सिखा देता है। दूसरा आप में एक ऐसी भावना आयेगी कि मैने सचमुच कुछ किया है या पाया है, sense of achievement इस में एक अलग आन्नद का अनुभव करेंगे। आप आराम और आलस्य का जीवन जी रहें है और अचानक ही आयकर बिभाग का एक नोटिस आ जाता है, जो आप समझतें हैं गलत है, तुरन्त आप में उसके विरूध लड़ने के लिये ताकत आ जायेगीं, आपका आलस्य खत्म हो जायेगा और इस के विरुध लड़ते हुये आप बहुत कुछ सीख जायेंगे। इस के लिये सब से आवश्यक यह है कि हम कुछ करते रहें । संघर्ष और भी मजा देने वाला बन जाता है जब हम हट कर कुछ नया करते है। आप अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी का जीवन पढ़े , आप पायेंगे कि वे सभी कुछ लकीर से हटकर नया करते गये और एक सफल व्यक्ति के रूप में उभरे। अभी मै स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन पढ़ रहा था। मैने क्या पाया कि वह एक चीज से नहीं जुड़े रहे, कुछ नया करते गये। गुरूकुल बनाया पर वहां से बाहर आ गये और देश की राजनिती में कूद गये वहां महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति को उनकी योगयता का लोहा मानना पढ़ा यही नहीं जब कांग्रेस वाले जलियांवाले कांड के बादं अपना वार्षिक सम्मेलन अमृतसर में नहीं करना चाहते थे तो वे डट गये कि अमृतसर में किया जाये और संघटनातमक कौशल दिखाते हुये एक सफल आयोजन हिया । सभी हैरान रह गये। वह गुरूकुल में बैठकर अपना बाकी सारा जीवन आराम से काट सकते थे पर उन्होने संघर्ष की राह को चुना। दलितोद्धार को पकड़ा तो महात्मा गांधी से टककर ली और बाबा अम्बेदकर ने उसके शानदार कार्य को देखते हुये कहा––––––स्वामी श्रद्धानन्द का नाम दलितोद्धार में सब से उपर है और सिंफ वही न कि महात्मा गाांधी जी दलितो के मसिहा कहलाने के हकदार है।

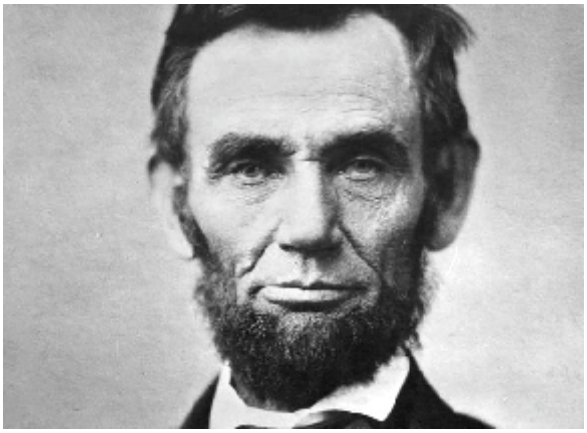

यह भी स्त्य है कि कुछ काम करेंगे तभी सम्स्याऐं आयेंगी अगर काम न करने की ठान ली है तो सम्स्याऐं नहीं आयेंगी और न ही संघर्ष का मौका मिलेगा। हमारे राजनितीज्ञों में चाहे कितने भी अवगुण हो परन्तु एक गुण है––– संघर्ष का रास्ता नहीं छोड़ते। चाहे चुनाव बुरी तरह हार जायें या फिर विरोद्धी दल जेल में डाल दे। फिर कुछ सालों बाद सामने और शक्तिशाली हो कर आ जाते हैं। यही कारण है आम व्यक्ति से अधिक आयु प्राप्त करते हैं। हिमाचल प्रदेश में श्रीमती विद्याा स्टोक 90 साल की है, बीरभद्र 86 के हैं, करूणानिधी 95 के, अडवानी 90 क, प्रकाश सिंह बादल 91 के, गिनते ही जाये। कोई जानलेवा बिमारी घेर ले या किसी दुर्घटना के शिकरर हो जायें अलग बात है। यही नहीं जो व्यक्ति निजी व्यापार या पेये में होते है उनका जीवन पैंशनधारियों से कहीं अच्छा होता है और लम्बी आयु होती है। श्री राम जंठ मलानी ने 94 वष्र की आये में पेशे से सन्यास लिया । जिम्बाबे के अपदस्थ राष्टरपति 94 साल के हैं और बहुत मुश्किल से उनको पद से अलग किया गया। संघर्ष क्या होता है तो उनका जीवन पढ़े। कहने का अर्थ है कुछ करने का जजवा व जनून और उन में जो संघर्ष होता है वही व्यक्ति को जीवित रखता है।

हम सभी के कुछ अरमान होते है। प्रश्न है कि क्या अरमानों को पूरा करना चाहते है या अरमानों में ही जीना चाहते हैं। यदि अरमानों को पूरा करना है तो संघर्ष करना आवश्यक है। यदि अरमानों में ही जीना चाहते हो तो संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं।

रास्ते आपके सामने हैं चुनाव आपने करना है।

*****

ज्ञानप्राप्ति व आत्म-विकास ही नहीं, अच्छा स्वास्थ्य व दीर्घायु प्रदान करने में भी सक्षम है स्वाध्याय

सीताराम गुप्ता,

तैत्तिरीय उपनिषद् में एक दीक्षंत संदेश मिलता है जिसमें विद्या पूर्ण करके जाने वाले स्नातकों को कुछ उपदेश दिए गए हैं जैसे सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः अर्थात् सत्य बोलिए, धर्म का पालन कीजिए व स्वाध्याय से मुँह न मोड़िए। और भी अनेक नीति की बातों का पालन करने का परामर्ष दिया गया है। स्वाध्याय के विषय में पुनः ज़ोर देकर कहा गया है ''स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय और प्रवचनों में प्रमाद अथवा असावधानी नहीं होनी चाहिए। स्वाध्याय के साथ–साथ प्रवचन पर भी बल दिया गया है। स्वाध्याय के द्वारा अपने ज्ञान में वृद्धि करते रहिए और विद्या का प्रचार–प्रसार भी। योग में भी स्वाध्याय की चर्चा की गई है। योग के आठ अंग हैं : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इन आठ अंगों में दूसरा अंग है नियम। नियम में पाँच व्रतों के पालन की बात की गई है : शौच, संतोश, तपस, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। स्वाध्याय योग का भी एक उपांग है। इससे स्वाध्याय के महत्त्व का ही पता चलता है।

हम जो स्वयं सीखकर औरों को जो बताते या सिखाते हैं वह प्रवचन है फिर स्वाध्याय क्या है? यदि हम किसी भी स्तर की शिक्षा किसी आश्रम अथवा विद्यालय या विश्वविद्यालय से प्राप्त करते हैं तो इस प्रक्रिया में कुछ उपयोगी ज्ञान व कुशलताओं को सीखते हैं लेकिन ज्ञान व कुषलताओं की कोई सीमा नहीं होती। न सीखने की ही सीमा होती है। जीवन को उत्कृश्ट बनाने के लिए भी हमें निरंतर सीखने अथवा नया ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। जो ज़रूरी ज्ञान अथवा जानकारी हम औपचारिक शिक्षा अथवा डिग्री के माध्यम से नहीं प्राप्त कर पाते उसे पाने का तरीका है स्वाध्याय। जहाँ पठन–पाठन अथवा शिक्षा–दीक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं होती वहाँ जिज्ञासु जन स्वाध्याय के द्वारा ही अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं। हम विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त स्वयं जो कुछ भी पढ़ते हैं वह स्वाध्याय ही है।

यदि स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ देखें तो पहले स्वाध्याय का अर्थ था वेदों का अध्ययन एवं अनुशीलन। उसके बाद हर प्रकार के धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन अथवा पठन–पाठन को स्वाध्याय कहा जाने लगा लेकिन आजकल हर प्रकार के साहित्य के अध्ययन एवं अनुशीलन को स्वाध्याय कहा जाता है। आम बोलचाल की भाषा में वह ज्ञान या जानकारी चाहे वो आध्यात्मिक हो या धार्मिक अथवा साहित्यिक–सांस्कृतिक हो या सामाजिक जिसे हम बिना किसी की मदद के स्वयं अध्ययन द्वारा अर्जित करते हैं स्वाध्याय कहलाती है। स्वाध्याय स्वयं का अध्ययन अथवा आत्मज्ञान नहीं है। फ्रांसिस बेकन ने भी कहा है : अध्ययन, उल्लास का, अलंकार का, योग्यता का कारण बनता है। ैजनकपमे मतअम वित कमसपहीजए वित वतदंउमदज दक वित इपसपजलण यहाँ उल्लास, अलंकार व योग्यता की बात की गई है आत्मज्ञान की नहीं। फ्रांसिस बेकन यदि आत्मज्ञान की बात करते तौ जनकपमे की बजाय मसत्मिंसप्रंजपवद लिखते।

स्वाध्याय अथवा मात्र पढ़ना भी यूँही नहीं हो जाता। स्वाध्याय के लिए एक मूल योग्यता अनिवार्य है और वो है अक्षर ज्ञान अथवा साक्षरता। जो व्यक्ति पढ़–लिख नहीं सकता वह स्वाध्याय भी नहीं कर सकता। लेकिन हमारे यहाँ अनेक लोग हुए हैं जो निरक्षर थे लेकिन ज्ञान के मामले में उनका कोई सानी नहीं हुआ। कबीर का उदाहरण हमारे समक्ष है। कबीर ने सत्संग के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति की। सत्संग भी स्वाध्याय का पूरक ही है। ज्ञानवान लोगों की संगत में भी हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि आज हम सत्संगों का जो स्वरूप देख रहे हैं उससे सत्संग की पूर्णतः नकारात्मक छवि हमारे सामने आती है। आज के दौर में गुणवान व ज्ञानवान लोगों की संगति ही वास्तविक सत्संग कही जा सकती है। सत्संग का माध्यम श्रवण है तो स्वाध्याय का माध्यम है पुस्तकें।

हमारे यहाँ साधन को साध्य मान लेने की भूल प्रायः होती है। मार्ग को गंतव्य मान लेते हैं। स्वाध्याय को भी आत्मज्ञान मान लिया जाता है। या आत्मज्ञान को स्वाध्याय कहने लग जाते हैं। वास्तविकता ये है कि स्वाध्याय आत्मज्ञान नहीं है। हाँ स्वाध्याय द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति में सहायता मिलती है। आत्मज्ञान क्या है और हम आत्मज्ञान क्यों प्राप्त करें ये भी शिक्षा अथवा स्वाध्याय या सत्संग से पता चलता है इसीलिए ये महत्त्वपूर्ण हैं। हम जिन यंत्रों की सहायता से कार्य करते हैं उनको भी महत्त्व देते हैं और उनकी पूजा करते हैं। क्योंकि स्वाध्याय भी आत्मज्ञान का

महत्त्वपूर्ण साधन है अतः उसे भी हम उसके समकक्ष ही मान लेते हैं। यदि आप स्वाध्याय को आत्मज्ञान ;मसि तमंसप्रंजपवदद्ध मानते हैं तो एक बात बतलाइए कि इसकी प्रेरणा आपको कैसे मिली? वास्तव में आत्मोत्कर्श, आत्मषुद्धि अथवा आत्मोत्थान साधना का विशय है। स्वाध्याय एक सूत्र है जो हमें साधना अथवा आत्मज्ञान अथवा आत्मोत्थान की ओर प्रेरित कर सकता है। उसके लिए भी हमें मन को साधना होता है।

हममें से कुछ लोग बहुत अधिक पढ़ते–लिखते अथवा स्वाध्याय करते रहते हैं। दुनिया के सारे ग्रंथों व ज्ञान को आत्मसात कर लेना चाहते हैं। इसका हम पर प्रभाव भी पड़ता है। लेकिन खूब पढ़ने–लिखने अथवा स्वाध्याय के बावजूद यदि हम आत्मज्ञान अथवा आत्मोत्थान की ओर अग्रसर नहीं हो सकते तो सारा स्वाध्याय निरर्थक है। वैसे आत्मज्ञान ;मसि तमंसप्रंजपवदद्ध नामक चिड़िया कम ही दिखलाई पड़ती है अतः इसकी मनमानी व्याख्या संभव है। ये स्वाध्याय ही जिसके कारण हम कुछ ज्ञान या जानकारी प्राप्त कर पाते हैं व कुछ व्यवहारकुषल बनते हैं जिससे हमारी आजीविका भी चलती है व समाज में सामंजस्य भी बना रहता है।

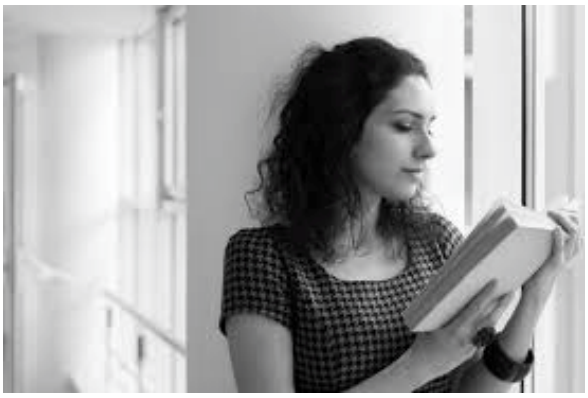

अब आत्मज्ञान को छोड़िए स्वाध्याय के बावजूद यदि हम श्रेय मार्ग का अनुसरण नहीं कर पाते तो हमारे पढ़ने–लिखने अथवा स्वाध्याय में कुछ न कुछ खोट है। स्वाध्याय से हममें विवेक उत्पन्न होना चाहिए लेकिन उससे पहले यह विवेक अनिवार्य है कि हम क्या पढ़ें? किन ग्रंथों का कितना अध्ययन करें। हम प्रायः अपने को किसी एक विषय अथवा मत तक सीमित कर लेते हैं जो हमारे विकास में सबसे बड़ा बाधक होता है। हमें विभिन्न विषयों व विविध मतों का अध्ययन करना चाहिए तभी हम वास्तविक तत्त्व को जानकर लाभांवित हो सकते हैं। कुछ लोग सारे जीवन पढ़ते रहते हैं लेकिन मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की वाली हालत रहती है। मैं आज तक सही निष्चय नहीं कर पाता कि क्या पढ़ूँ? मुझे तो लगता है कि यदि हमें सही–सही पता लग जाए कि हमें क्या पढ़ना चाहिए और क्या नहीं तो पढ़ने की ज़रूरत ही न रहे। लेकिन जब तक हम इतने ज्ञानवान अथवा प्रबुद्ध नहीं हो जाते पुस्तकों का ही आसरा है। अच्छी पुस्तकों की खोज और उनका पठन–पाठन जारी रखिए।

स्वाध्याय करने के लिए भी किसी माध्यम की आवश्यकता होती है और वो माध्यम है ग्रंथ अथवा पुस्तकें। पुस्तकों का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है इसमें संदेह नहीं लेकिन आज लोगों में पढ़ने की आदत कम होती जा रही है अतः पुस्तकें साथ रखने का सवाल ही पैदा नहीं होता। अब तो जिधर देखो लोग कान में प्लग या हैंड्सफ्री सेट लगाए मोबाइल से बातें कर रहे होते हैं या संगीत सुन रहे होते हैं। तकनीक बदलने से साधन या माध्यम बदल जाते हैं लेकिन पुस्तक का स्थान कोई साधन नहीं ले सकता। पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी मित्र होती हैं जिनके रहते कभी अकेलेपन का अहसास नहीं हो सकता। मित्र हमसे विवाद कर सकते हैं, हमारा विरोध कर सकते हैं, हमारी प्रशंसा अथवा चापलूसी कर सकते हैं लेकिन एक पुस्तक कभी ऐसा नहीं करती अतः उसके साथ निर्वाह करना सरल है।

पुस्तकें खाली समय में हमें बोरियत से बचाकर न केवल हमारा मनोरंजन करती हैं अपितु हमारा ज्ञानवर्धन और मार्गदर्शन भी करती हैं। हमें स्वयं को जानने का अवसर प्रदान करती हैं। आत्मविकास विषयक पुस्तकों के अध्ययन द्वारा हमें अपनी ग़लत आदतों, कमज़ोरियों और बुराइयों को जानने का अवसर मिलता है। हमारे मित्र, रिष्तेदार अथवा सहकर्मी हमें हमारी कमियों के विषय में बतलाने का ज़ोख़िम प्रायः नहीं लेते। यदि कोई भला व्यक्ति हमें हमारी कमियों के विषय में बतलाने का साहस करता भी है तो हम अपने अहं अथवा अन्य कारणों से उसे स्वीकार करने से कतराते हैं। उसे स्वीकार कर सुधारने की बजाय तर्क–वितर्क द्वारा अपनी कमियों को सही ठहराने का प्रयास करते हैं।

पुस्तकें तटस्थ होती हैं। हमें उनसे तर्क–वितर्क करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। पुस्तकों के सामने हमारी पोल–पट्टी खुलने का डर नहीं होता अतः उनके संदेश को ग्रहण करना अपेक्षाकृत सुरक्षित और सहज होता है। पुस्तकें तटस्थ रहकर हमारा मूल्यांकन करने में सक्षम होती हैं। उनमें मानवीय दुर्बलताएँ नहीं होतीं इसलिए हमारा भावनात्मक शोशण नहीं तटस्थ मूल्यांकन करती हैं। पुस्तकें हमारे अहं को ठेस नहीं पहुँचातीं। पठन–पाठन के दौरान चिंतन–मनन करते समय यदि हमें लगता है कि हममें कुछ बुराइयाँ या ग़लत आदतें हैं तो उन्हें स्वीकार करने में हमें हिचक नहीं होती और हम उन

बुराइयों से छुटकारा पाने का तरीक़ा खोजकर उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं।

जब तक किसी बीमारी का सही निदान नहीं हो जाता तब तक उसका उपचार भी संभव नहीं होता। पुस्तकें भी न केवल हमारा निदान करने में सहायक होती हैं अपितु उपचार करने में भी सक्षम होती हैं। साहित्य हमारे अंदर समाज को समझने की योग्यता उत्पन्न कर हमें अधिकाधिक संवेदनषील बनाने में सहायक होता है। व्यक्तित्व विकास अथवा आत्म विकास विशयक पुस्तकें हमारे मनोभावों का परिश्कार कर भावनात्मक संतुलन उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। ज्ञान–विज्ञान तथा दुनिया भर की दूसरी जानकारी तो पुस्तकों से बोनस के रूप में मिल ही जाती है। एक अच्छा यात्रावृत्तांत आपको घर बैठे पूरी दुनिया की सैर करवाने में सक्षम होता है। एक अच्छी पुस्तक हमारा दृष्टिकोण बदलकर जीवन ख़ुशहाल बना देने में समर्थ होती है।

पुस्तकों का हमारे स्वास्थ्य से भी सीधा संबंध है। पठन–पाठन और चिंतन–मनन के दौरान हमारी एकाग्रता का विकास होता है जिसका हमारे भौतिक शरीर पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस दौरान शरीर में अंतःस्रावी ग्रंथियों से ऐसे हार्मोंस निकलते हैं जो हमारे शरीर को न केवल आराम पहुँचाते हैं अपितु हमारी रोगों से लड़ने की शक्ति को भी बढ़ाते हैं। दूसरे फीलगुड हार्मोंस के कारण षरीर अच्छा अनुभव करता है और चुस्ती–स्फूर्ति बनी रहती है। नींद अच्छी आती है। कहने का तात्पर्य ये है कि पुस्तकों से हमारी न केवल बाह्य जगत की जानकारी में वृद्धि होती है अपितु पठन–पाठन से आत्मिक विकास व रोगमुक्ति में भी सहायता मिलती है।

पिछले दिनों येल विष्वविद्यालय में हुए एक शोध के अनुसार औसतन आधा घंटा पुस्तकें पढ़ने वाले व्यक्ति पुस्तकें बिल्कुल न पढ़ने वाले व्यक्तियों की तुलना में दो वर्ष तक अधिक जीते हैं। इस तरह से पुस्तक पढ़ने की आदत व्यक्ति को दीर्घायु भी बनाती है। वास्तव में पुस्तकों से मिले ज्ञान व आत्मविकास में वृद्धि से व्यक्ति की विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की योग्यता, क्षमता व कुशलता में वृद्धि होती है जिससे उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने में मदद मिलती है। तनावमुक्त व्यक्ति भी अपने जीवन में अच्छा कार्य करके अपेक्षाकृत अधिक धन कमाने में सक्षम होता है जिससे उसके जीवन में संतुश्टि बनी रहती है। इन सब बातों से उसे प्रसन्नता मिलती है और प्रसन्नता से अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु। नियमित रूप से अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत डालिए और जीवन में आगे बढ़ने के साथ–साथ तनाव व दुष्चिंताओं से मुक्त होकर अच्छा स्वास्थ्य व दीर्घायु भी पाइए।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034, फोन नं. 09555622323
Email: srgupta54@yahoo.co.in

*****

प्रभु भक्ति

संतकबीर ने एक भजन में कहा है–
औषध खाउ न बूटी खाउं, न कोई
वैद्य बुलाउं। एक ही वैद्य मिलो
अविनाशी, वाही को नबज दिखाउं।।

ईश्वर भक्ति जहां शारीरिक उन्नति के लिये आवश्यक है, वहीं आत्म–कल्याणके लिये भी परम आवश्यक है। जिसप्रकार भोजन के बिना शरीर का काम नहीं चल सकता, सच पूछा जाये तो शरीर के

लिए भोजन इतना आवश्यक नहीं, जितना आत्मा के लिए ईश्वर भक्ति है। इसीलिए ईश्वर भक्ति को आत्मिक खुराक अर्थात् भोजन कहा गया है। ईश्वर भक्ति से ही अज्ञान तिमिर का नाश होकर आत्मा में ज्ञान ज्योति का प्रकाश होता है। ईश्वर भक्ति के बल से ही मनुष्य संसार में अपनी सब शुभ कामनाएं पूर्ण कर सकता है। प्रभ भक्ति से रोग, शोक, सन्ताप, दरिदर्ता, चिन्ता, निर्बलता आदि जितने भी क्लेश हैं,

वह सब दूर हो जाते हैं। प्रभु का अनन्य भक्त पर्वत के समान भारी से भारी

आपत्तियों और संकटों में भी नहीं घबराता। प्रभु भक्तिहीन मनुष्य न तो सच्ची शान्ति और न आनन्द का अनुभव कर सकता है और न ही प्रभु के इस परम सुन्दर और सुखमय संसार का सच्चा रसास्वादन कर सकता है। अतः आत्मकल्याणा अभिलाषी जनों को प्रतिदिन प्रभु का चिंतन अवश्य करना चाहिए और बच्चों को भी प्रभु भक्ति के लिए प्रेरित करना चाहिये।

प्रभु भक्ति आत्मिक भोजन तो है ही, किन्तु इससे शरीर भी स्वस्थ, बलवान् और नीरोग

बनता है। उस सर्वशक्तिमान् का एकाग्रचित्त होकर चिन्तन करने से साधक को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्ति अवश्य प्राप्त होगी इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। ईश्वर भक्ति से मनुष्य को एक अलौकिक आनन्द और अद्‌भुत शान्ति प्राप्त होती है, उसका शरीर के उपर भी

बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। शरीर की सब धातुओं–उपधातुओं की विषमता दूर होकर उसमें समता व शक्ति का संचार होता है। संत, महात्मा तथा योगी जनों के स्वस्थ, बलवान् ओर दीर्घजीवी होने का ईश्वर भक्ति ही एक मुख्य कारण है।

वेद और प्रभु भक्ति

आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।

यस्य छायाश्मृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

जो आत्मबल को देनेवाला है, जिसकी उपासना सारा विश्व करता हैं और देवता भी जिसके प्रशासन को मानते है और सर्वोच्च आज्ञा में चलते हैं, जिस की शरण में आना अमर होना है और जससे दूर होना मृत्यु है । ऐसे ईश्वर की ही हम उपासना भक्ति करें।

कहने का भाव है ऐसी महान शक्ति की ही भक्ति उपासना करें जिस के वरचस्व को श्री राम, कृष्ण, दयानंद जैसे देवता भी मानते थे और जिस से दूर होने पर कष्ट, दुख सहन करना पड़ता है जैसे की कंस, रावण को प्राप्त हुआ ।

स्नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुभनानि विश्वा।

यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामनध्यैरयन्त।।

हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता है। अर्थात;भाई के समान सुखदायक है। सारे जगत का उत्पादक है। वह ही सारे संसार को जानने वाला है। मोक्ष; संसारिक दुखः सुख से रहित परम आन्नद को प्राप्त करने के लिये विद्वान लोग जिस प्रभु के आश्रय में जाते हैं वही प्रभु अपना आचार्य,राजा व न्यायधीश है हम उस प्रभु को पाने के लिये अति प्रेम से भक्ति कर रहे

आज के समय में निश्कर्श––––किसी बाजारी बाबा को ईष्वर न माने उसे ही माने जिसे श्री राम, कृश्ण, दयानंद जैसे देवता ने भी माना और भक्ति उपासना की। यही आर्य समाज की विचारधारा है। महाराश्टर प्रान्त में एक कहावत है–––ईकालो जानो और ईकालो मानो। एक ईष्वर को ही जानने की कोषिष करो और जानने के बाद एक को ही मानो। अर्थात भगवान बनकर घूमने वाले इन बाजारी बाबों से दूर रहें और एक ईष्वर को ही माने जिसे सब देवता मानते रहे। अगर आप इन बजारी बाबों को ईष्वर का स्थान देते हो तो आप स्वामी दयानंद की विचारधारा को मानने वाले नहीं हो सकते, अर्थात आर्य समाजी नहीं है, चाहे ही हवन करते है और वेदों के मन्त्र बोलते है।

प्रभु का स्मरण और चिन्तन करना भी मनुष्य को अपनी दिनचर्या का एक मुख्य अंग बना लेना चाहिए। इसलिए माता पिता का कर्तव्य है कि बच्चों को प्रारम्भ से ही प्रभु भक्ति की ओर अग्रसर करें चाहिए। जो आप लाहते हैं और जिस के लिये आप प्रयत्न करते है बच्चो उसको सीखते हैं, इस में कदापी कोई शक नहीं। इस लिये प्रभु भक्ति की और आप बच्चों को ले जायेंगे तो बच्चो अवश्य जायेंगे।

*****

HEAD OF STATE

(President & Prime Minister) and - Rig Veda.

Bhartendu Sood.

It should be a matter of pride for all Indians that 30 manuscripts of Rig-Veda, find place UN's heritage list. The holy scripts which are believed to contain the knowledge imparted to the learned Rishis by God (shrutis), are considered to be a manual for living a life in the spirit of Manurbhav (be a man) and have an inspirational message to all the members of United Nation countries numbering 193.

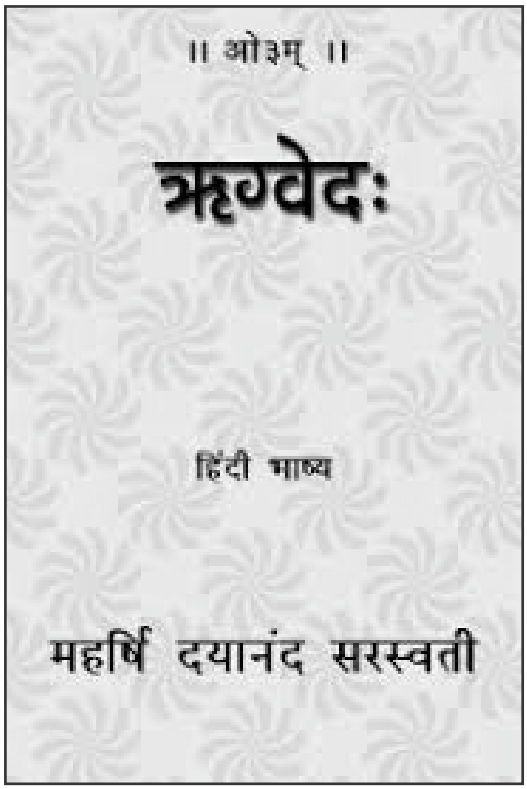

When we have General elections, as we are going to witness in early 2019, a question props up before the voters whom they should vote and what all qualities and attributes he should possess, it will be most befitting to take a look at Rig Veda. There will not be bigger fools than us if our reverence to this holy and most ancient script is confined to only lip service and instead people of other countries use this treasurer of divine knowledge.

Rig Veda 111 38.6 says –"Let there be for the benefits of the rulers and ruled three assemblies-1 Religious, 2-Legislative and 3-Educational and it postulates democratic system of Government

Rig Veda 1,39.2 says-Rulers remain politically great, as long as they remain honourable, just and virtuous. When they become wicked and unjust, they are absolutely ruined. Therefore, let people elect only those who possess these virtues and should not think twice in voting out those who are dishonest, wicked and unjust. Then we should have most learned men as members of the Educational assembly, most devout men as members of Religious assembly and men of most praiseworthy character as members of Legislative assembly; and let that great man among them, who possesses most excellent qualities, is highly accomplished and bears most honourable character be made the Head of state. It is crystal clear that Vedas do not postulate to have criminals, swindlers or men of low virtues to be elected to the governing bodies. They should be virtuous honourable and men of probility in public life.

When it comes to other qualities and attributes, Vedas say that the head of state should be dear to his people's heart as their very breath, just in dealings as a Judge and should be able to read the inmost thoughts of his people. He should enlighten the hearts of his subject by the spread of knowledge, justice and righteousness and dispel ignorance and injustice as the Sun illuminates the World. He who consumes wickedness like fire and rightly administer the law of the land, , who makes the country rich and prosperous and keeps treasures full, who is powerful and majestic like the sun and on whom no one in the world dares to look with stern eyes is fit to be the head of a state.

*****

दयालु होना क्या है?

नीला सूद

अक्सर हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं–––––हू प्रभु हमें दयालु बनायें। दयालुता ईश्वरिय गुण है क्योंकि ईश्वर स्वयं भी दयालु है। यहां यह समझना आवश्यक है कि दयालु होना क्या है। एक शोद्ध के अनुसार दूसरे की भावना और आवश्यकता को समझ जाना और उस के अनुसार अपने व्यवहार को बना देना या दूसरे की आवश्यकता को उस के कहे बिना पूरा कर देना ही दयालुता है। First part is called cognitive empathy and second part is affective empathy .

मेरी सासु मां (Mother-in-law) एक बार दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान एक छोट स्टेशन पर बैठे दूसरी गाढ़ी का इंतजार कर रहे थे। उन्हे दमें का रोग था । वहीं बैठे हुये उन्होने देखा कि एक भिखारी को उन से भी अधिक दमा था और कोई दवाई न लेने के कारण उसकी हालत बहुत दयनीय थी। उन्होने उसी समय अपनी दवाई के डिब्बे में से दो गोलिया उसे पानी के साथ खिला दी। दो घटे में ही उस को बहुत आराम मिल गया जो कि उसने सालों से अनुभव नहीं किया था। उनके पास दवाई के दो पत्ते थे उन्होने अपने लिये दो गोली रख कर बाकी सब उस को दे दी और कहा कि खत्म होने पर किसी कैमिस्ट को यह पत्ता दिखा कर ओर लेते रहना। 20 दिन बाद जब वे वापिस शिमला पहुंचे तो एक पोस्ट कार्ड आया हुआ था। वह पत्र उस स्टेशन के रिटायरिंग रूम के इंचार्ज ने लिखा था–––आप द्वारा दी गई दवाई खाने से वह भिखारी बहुत स्वस्थ अनुभव करता है यही नहीं उसने अब सामान ढोने का काम भी शुरू कर दिया है। आपका पता मेरे पास था इस लिये यह पत्र आप का धन्यवाद देने के लिये लिखा है। ऐसे दयालुता के कार्य एक अलग प्रकार का सुख मन को देते है।

उदाहरण के लिये आप लाईट जला कर पुस्तक पढ़ रहें हैं और आप के कमरे में सो रहे दूसरे व्यक्ति को उस तीव्र प्रकाश के कारण सोने में मुश्किल हो रही है और सो नहीं पा रहा, उसके कहे बिना ही , आप द्वारा उस कमरे की लाईट को बन्द कर दूसरे कमरे में चले जाना ही दयालुता है। आप सफर में जा रहें हैं, आप के पास ही एक बृद्धा बैठी है जो कि बाहर नहीं जा सकती, उस को पानी या खाने का सामान ला देना या अपने में से ही दे देना दयालुता हैं। मैं एक बार मिस्र की राजधानी काईरों के मैटरो सटेशन से साढ़िया चड़ रही थी, मेरे हाथ में भारी बैग था। मेरी मुश्किल को देखते हुये साथ वाले व्यक्ति ने उस`ले लिया । ऐसे दयालुता की छोटी सी बात भी जीवन भर याद रहती है।

ढक और उदाहरणए आप किसी गरीब बच्चे को रोज स्कूल जाते देखते हैं। आप को लगता है कि उसके जूते फटे हुये हैं, उसके मांगे बिना ही उसे नये जूते उपलब्ध करवा देना दयालुता है। ईश्वर दयालु है क्योंकि वह हमारे लिये जीवन के सारे साधन उपलब्ध करवाता है। किसी अपराधी को माफ कर देना दयालुता नहीं है पर अगर ऐसा लगे की वह पश्चाताप की अग्नि में जल रहा है और उस का व्यवहार बदल गया है, उस के दण्ड को कम कर देना दयालुता है।

कई व्यक्ति कहते है कि स्वामी दयानन्द द्वारा उस व्यक्ति को माफ कर देना जिसने की उन्हें जहर दिया था, दयालुता नहीं। मेरा मानना यही है कि महर्षि दयान्नद जैसे व्यक्ति अपनी उपासना द्वारा ईश्वर के इतने नजदीक पहुंच जाते है कि उनके अन्दर घृणा या बदले की भावना बिल्कुल खत्म हो जाती हैं। ऐसे में वे इतने उदार हो जाते हैं कि बदले की भावना उनहें छू भी नहीं सकती। इसी कारण से स्वामी दयानन्द ने जहर देने वाले को भी माफ कर दिया।दयालुता की भावना को इस महाभारत की इस सुन्दर घटना द्वारा समझा जा सकता है।

दुर्योधन द्वारा पाण्डवों को दिये गये वनवास के दौरान एक वर्ष के लिये कुन्ती समेत सभी पाण्डवों को भेष बदल कर रहना था। एक दिन कुन्ती जिस घर में काम करती थी, उस की मालकिन दुख में बहुत रो रही थी। जब कुन्ती ने उस औरत से, जिस का पति मर चुका था, इस तरह रोने का कारण पूछा, तो उस ने बताया––––– ''उस कस्बे के बाहर एक बहुत शक्तिशाली राक्षस रहता है । पहले तो वह मनमाने ढंग से कभी भी आकर आक्रमण कर देता व मनुष्यों, पशुओं को खा जाता व बहुत नुकसान करता था पर जब कस्बे के मुख्य लोग उसे अपना अनुग्रह लेकर मिले तो वह इस बात पर राज़ी हो गया कि वह मनमाने ढंग से आक्रमण कर के मनुष्यों, पशुओ को नहीं खायेगा व कस्बे वालों में से एक व्यक्ति महीने में एक बार पूरे महीने का राशन लेकर उस के पास जायेगा और वह व्यक्ति भी उस के भोजन का अंग होगा। आज मेरे पुत्र की बारी है जो कि मेरा इकलौता पुत्र है। मै न केवल पुत्रहीन हो जाउंगी बल्कि हमारे घर में कोई भी पुरूष नहीं रहेगा।''

कुन्ती का हृदय उस की हालत सुनकर दयालुता से भर गया।ं वह अपने मन में सोचने लगी––––'' मेरे तो पांच पुत्र हैं, अगर एक चला भी गया तब भी चार पुत्र रह जायेंगे। पर इस बेचारी का तो ले देकर ऐक ही पुत्र है। जब उस को राक्षस खा जायेगा तो यह बिन सन्तान रह जायेगी, मुझे अवश्य इस की सहायता करनी चाहिये।

उसने घर जा कर पुत्रों से बात की तो वे सभी ऐसा अवसर पाने के लिये आतुर नज़र आये, पर कुन्ती ने भीम को चुना व भीम ने उस शक्तिशाली राक्षस को मार कर सब को राहत दिलाई। पर जो बात यहां देखने वाली है कुन्ती की दयालुता की भावना। दयालु मनुष्य अपने दुख की परवाह किये बिना दूसरे को सुख दे कर प्रसन्न होता है। अपने रक्त का दान देना एक दयालुता का काम है।

उसी शोध के अनुसार यदि माता पिता दयालु हों तो बच्चा भी दयालु होता है पर सब से अधिक प्रभाव पड़ता है वातावरण का। मांस खाने वाले माता पिता का बच्चा इस लिये प्राणियों पर दया नहीं कर पाता क्योंकि वह उस वातावरण में पला होता है। जब िकवह बच्चा जिस के माता पिता मांस से परहेज करते हैं, बहुत चाह कर भी मांस नहीं खा पाता क्योंकि उसे सिखाया जाता हे कि हमें प्राणियां पर दया करनी चाहिये। उन में भी वेसे ही प्राण और जीवन है जैसे की हम में होता है।

अपने सुख दुंख की परवाह किये बिना दूसरे को सुख देने की ईच्छा रखना और उस के लिये जितना हो सके करना ही दयालुता है

*****

Why I am not happy to pay income tax

Bhartendu sood

I have been an income tax payee since I started by service career, in 1972. In the early years I never gave a thought why tax is deducted from my salary and where all it goes until in 1985 when the then Prime Minister Rajiv Gandhi during her visit to drought –affected Kalhandi District in Orissa, made a startling revelation that of every rupee spent by the government only 15 paise reaches the intended party. To this my father's angry reaction was "This is the fate of tax payer's money in our country". Both the statements were thought provoking when it came to the taxes and their end use.

By that time I was a senior executive, dealing with Banks& financial institutions and taking plethora of approval for installation of green field projects from various government departments. This thoroughly exposed me to the working of these institutions. What really left me baffled and amused was that the majority of senior officers in Banks and govt. departments carried a ferocious sense of entitlement for undue gratification from clients and if their palms were greased they could go to any extent in bending the rules and throwing procedural requirement in to the wind and the best part was that it is they who would tell you the short cuts. Their demands could be very funny, I remember one top man of the Bank asking me if I could arrange honeymoon trip of his newly married son in Switzerland.

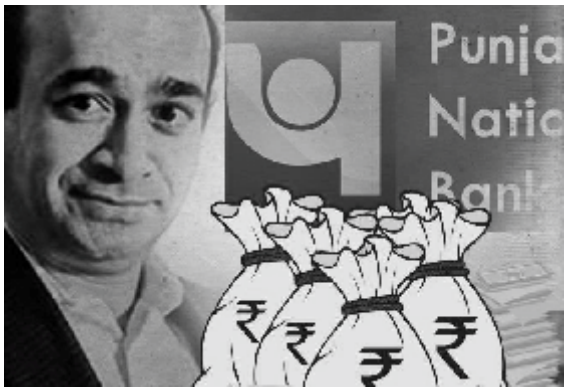

It was also the time when govt. had started assuming the new avatar of welfare state, with the hidden objective to create vote bank for the ruling party. It opened new avenues of corruption as these subsidies reached only 20 % of the deserving and even they had to spend 20-30% of their entitlement to get enrolled. With the financial reforms of 1991 and opening up of economy, industrialization and infrastructure development also picked up pace and it gave birth to thousands of fly by night companies, wheeler dealers and financial wizards. (the one who could help the promoters loot Banks & financial Institutions and dupe public with fake Public issues.) Any promoter could not only set up a project of even 200 crores without investing even a single penny from his pocket but could purchase mansions of the value Rs 50 crore and above in India or abroad by diversion of funds, provided he was good in bribing and public relations or had hired a financial wizard to do everything for him. By now politicians had also started demanding their share in the booty and rather had started setting up business ventures themselves as getting money from banks was much easier for them.. After two or three years ninety percent of such promoters would not be traceable. Today bulk of the NPAs and provisions for bad loans what we see in the balance sheets of our public sector banks, are the creation of that period which started in 1991 and still continuing though frequency has reduced but not the magnitude. Audit by CA or CA certificate is something that has failed to serve its usefulness rather it makes the delinquent officers to act fearlessly as that acts as a shield to the wrong doing. Had CA's been doing their work sincerely; frauds could have been much less. Unfortunately, most of the people in this profession work as agents or middlemen. Even Gitanzali jewelers or Nirab Modi companies must have been getting everything audited with supporting certificates from CA's.

RBI report says, every 4 hours one bank staffer is held for fraud. This is only a tip of the iceberg since the number of those who do and manage to get away must be at least 100 times more. Nothing tells

better about the fate of tax payers money than this revelation that between 2013 and 2016, all banks lost Rs 66K to 17504 frauds and one can't say how much more skeletons lie undetected inside the cupboard

Under the situation, please don't ask me why I'm not happy to pay taxes in India.

Dear Mr. Jaitley, nobody is against widening the tax payer's base but equally important is to stop the abuse of tax payer's money which hurts the genuine tax payers.

*****

जल जीवन का आधार है

ओम अमृतापस्तरणमसि स्वाह–––वेद के इस मन्त्र का अर्थ है। हे परमेश्वर आप जगत के आधार हो। आपका यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो।

प्रसिद्ध कवि रहीम ने कहा है---बिन पानी सब सून। अर्थात जल के बिना कुछ भी नहीं। कहने का अर्थ है––जल जीवन है। यह सच्चाई है। अगर हम अपना इतिहास देखें तो पायेंगे कि राज्य और शहर वहीं बसाये गये जहां नदियां थी या जल का स्त्रोत था। बड़ी सभ्यतायें वहीं पनपी जहां जल था। परन्तु दुख इस बात का है कि आज मनुष्य इस सच्चाई से आंखे मूंद रहा है। किसी को इस बात की चिन्ता नहीं कि जमीन के नीचे का जल तेजी से खत्म हो रहा है। जमीन का हृदय चीर कर पानी निचोड़ने वाले जमीन का दर्द समझने की कोशिश नहीं कर रहे।

बोतलबन्द पानी बेचने वाली कम्पनियां हां या सोफट ड्रिंक बनाने वाली, सभी भूमीगत पानी का बेखुमार दाहन कर रही है। इसका दुष्परिणाम सामने है। पानी का स्तर नीचे जाता जा रहा है। जहां पानी 20 फुट पर मिल ताजा था, आज 60 फुट पर भी बहुत तलाशने से मिल रहा है।

परन्तु इस से भी अधिक चिन्ता का विषय है कि हमारे किसानों द्वारा बढ़ चढ़ कर कीटनाशकों करने से पानी विषक्त होता जा रहा है। परन्तु इस देश में किसान चाहे स्टवल जला कर वातावरण को दुषित करे या फिर कीटनाषकों द्वारा जल को, उन को कुछ भी कहने की हिम्मत किसी में नहीं क्योंकि वह तो वोट बैंक है।

अच्छा हो हम जागे और एक एक बून्द पानी की बचाने की सोंचे। जल कल्याणकारी तभी होगा जब हम इस जल के मूल्य को जानते हुये इसका वैसे ही आदर करें जैसे दूध का करते हैं। जल के बिना जीवन सम्भव नहीं, दुध के बिना फिर भी जी सकते है। पर यही जल यदि दुषित रू‍प में प्रयोग किया जाये तो जानलेवा बिमारियां पैदा करता है। पजाब के बड़े क्षेत्र में दुषित जल का प्रयोग कैंसर जैसी बड़ी बिमारी का कारण बन रहा है। ईश्वर तभी सहायता करता है जब मनुष्य स्वयं कुछ करता है। ईश्वर से प्रार्थना करते हुये कि––– आपका यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो, हमें भी कुछ करना होगा। इस के लिये दो कदम आवश्यक हैं, हम स्वयं भी जल की एक एक बून्द बचाने की सोंचे। दूसरा जो हमारा कदम जल को दुषित कर रहा है उस पर सख्ती से रोक लगायें। आप को यह जानकर हैरानगी होगी कि दुनिया में इस समय अनाज की कमी नहीं पर पीने वाले जल की है। हमारा देश इस मामाले में बहुत भाग्ययाली है, यहां जल दूसरे बहुत से देशों से कहीं अधिक और अच्छा व शुद्व है । इस लिये अनाज पैदा करने के लिये जल को दूषित न करें या होने दें। यह पाप है और मानवता के साथ धोखा है। एक तरफ तो हम भारतीय अपनी औलाद के लिये मकान से लेकर सब सुख छोड़ना चाहते हैं और दूसरी तरफ यदि जल के स्त्रोत ही हम खराब या खाली कर गये तो इन दूसरी चीजों को को छोड़ने का कोई लाभ नहीं।

*****

ईश्वर केवल आपकी भावनाओं को देखता है

भारतेन्दु सूद

अभी चण्डीगढ़ में साकेतड़ी स्थान पर पुराने शिव मन्दिर में से चोर 30 लाख की सोने की मूर्तीयां चोरी कर लापता है। पहला प्रश्न तो वही है जो स्वामी दयानन्द को बाल्यकाल में मन में आया था ————जो ईश्वर अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह ईश्वर हो ही नहीं सकता क्योकि ईश्वर तो सब कुछ जानता है और सब कुछ देख रहा है।

दूसरा, मान लो आपको ध्यान केन्द्रित करने के लिये किसी प्रतिमा की आवश्यकता है, तो सोने की ही क्यों? आम धातु या पत्थर की प्रतिमा भी काम कर सकती है। सोना है तो ईश्वर के प्राणियों की अन्न, शिक्षा और स्वास्थय उपलब्ध कराने में खर्च हो न कि उस के श्रृगांर के लिये जो कि बिना गहनों के ही सब से सुन्दर है।

निम्न लेख इस पर और अच्छा प्रकाश डालेगा

दक्षिण भारत की एक काल्पनिक कहानी है। पूसालार नाम के एक गरीब शिव भक्त साधु ने , जिसके पास कुछ भी नहीं था, अपने ईष्ट देव शिव के लिये एक शानदार मन्दिर बनाने का निश्चय किया। उसके पास धन दौलत तो था नहीं जिस के द्वारा वह मन्दिर बनाने के लिये इंट, संगेमरमर, सोना, चांदी, हीरे और दूसरा सामान खरीदता, इसलिये वह अपने मन में ही रोज मन्दिर का निर्माण करता रहता और इस काल्पनिक मन्दिर को बनाते भी उसे कई साल लग गये।

संयोग की बात कहें कि जहां पूसालार रहता था, वहां के राजा भी शिव भक्त था और उसने भी उसी दौरान अपने ईष्ट देव शिव की अराधना में एक शानदार मन्दिर बनाने का निश्चय किया। राजा के पास तो सोना, चांदी, हीरों की कोइ कमी न थी। उस ने एक बहुत ही शानदार मन्दिर बनवा कर तैयार कर दिया। उस मन्दिर के बनाने का काम उसी समय पूरा हुआ जब कि पूसालार का काल्पनिक मन्दिर बन कर तैयार हुआ।

राजा चाहता था उस शानदार मन्दिर को भगवान शिव को अर्पित करे और भगवान शिव स्वयं आकर उस का उदघाटन करें। इसलिये भक्ति करते हुये जब शिव भगवान राजा के सामने प्रकट हुये तो उस नें शिव भगवान को अपनी ईच्छा जाहिर की। शिव भगवान ने सुना तो अपनी असर्मथता जाहिर करते हुये बोले————प्रिय भक्त मैं ज़रूर आता पर उस दिन तो मेरे ऐक और भक्त पूसालार ने अपने मन्दिर के उदघाटन के लिये बुलाया है। उसने भी बहुत ही शानदार मंदिर बनाया है।

राजा हैरान और स्तब्ध था————मैं अपने राज्य के सभी घनाडय व्यक्तियों से वाकिफ हूं। पर उन्होने तो कोई ऐसा मन्दिर बनाया नहीं। कौन है यह पूलासार जिसने की ऐसा शानदार मन्दिर बनाया है कि राजा होने के बावजूद शिव भगवान ने मेरा आमन्त्रण ठुकरा कर उसका आमन्त्रण स्वीकार किया है। मझे पुलासार का अवश्य पता लगाना चाहिये। राजा ने अपने अधिकारियों को उस की खोज पर लगा दिया । आखिर एक दिन उसका पता लग गया।

राजा उससे मिलने गया तो एक झोंपड़े के सिवा कुछ नहीं था। पूसालार राजा को अपने सामने देख कर हैरान और घबराया हुआ था कि तभी राजा ने उससे पूछा———तुम ही हो पूसालार? हां, महाराज, मुझ गरीब को ही पूसालार कहते है। जवाब मिला। राजा ने उपर से नीचे तक पूसालार कां देखा और चुटकी लेते हुये पूछा———— कहां है तुम्हारा शानदार मन्दिर जिस के उदघाटन के लिये भगवान शिव आ रहें है। पूसालार कुछ सम्भला और बोला———वह मन्दिर तो मेरे अन्दर ही है जिसे मैं देख सकता हूं या शिव भगवान देख सकते है। राजा सब कुछ समझ गया था। उसे पता लग गया था, ईष्वर तो केवल हमारी भावनाओं को देखता है। उस सृष्टी के मालिक को हमारे इन सोने चांदी हीरों से मढ़े मन्दिरों से कुछ नहीं लेना। आखिर यह सब भी तो उसी का है। तभी तो कहा है, इसी बात को समझाने के लिये रूस के प्रसिद्ध साहित्यकार टालस्टाय ने एक कहानी लिखी है। एक ईसाई धर्म प्रचारक थे, जिन्हें हम पादरी भी कहते हैं। वह स्थान स्थान घूम कर लोगों को ईसा का उपदेश देते थे। बाइबिल में लिखी प्रार्थना सिखाते और कहते——— ''इस प्रार्थना को वैसे ही बोलो

जैसे मैने सिखाई है, तभी तुम्हारा कल्याण होगा।'' एक बार दूसरे देश जाने के लिये जहाज में सवार थे तो उन्हें एक द्वीप दिखाई दिया। सोचा यहां भी अवश्य कोई रहता होगा। यहां प्रचार के लिये रूकना चाहिये। साथियों समेंत उस द्वीप में उतर गये। उन्हें बहुत चलने पर दस व्यक्तियों का झुंड दिखाई दिया। पास गये तो देखा उनकी वेष भूषा सब अलग आदीवासियों वाली थी। पूछने पर बताया कि उस द्वीप में उनके समेत कोई सो के करीब लोग रहते थे।

पादरी ने पूछा कि क्या कभी इश्वर को भी याद करते हो? उन में से एक ने जवाब दिया–––हम बैठ जाते हैं, हाथ उठाकर उपर देखते है और कहते हैं हमारी रक्षा करो और जब कुछ चाहिये हो तो मांग लेते हैं।

पादरी ने कहा–––––'' यह प्रार्थना का तरीका नहीं। मैं तुम्हें प्रार्थना व प्रार्थना करने का ढंग बताता हूं। कई दिन लगाकर पादरी महोदय ने बाइबिल में लिखी प्रार्थना उन्हे सिखाई व उन से सुनी और जब तसल्ली हो गई कि वे ठीक प्रकार से सीख गये हैं तो अपने जहाज में बैठकर दूसरे स्थान के लिये चल दिये।

अभी कुछ मील दूर ही गये थे तो क्या देखते हैं कि उन में से तीन व्यक्ति जहाज की और दौड़े चले आ रहें है। हैरानगी वाली बात क्या थी कि वह पानी पर दोड़ रहे थे। पास पहुंचे तो पादरी से बोले––––आप जो प्रार्थना हमें सिखा आये थे, वह हम भूल गये। कृपा करके फिर से सिखा दे। पादरी बोले जरूर बताउंगा पर पहले मुझे यह बताओ कि तुम पानी पर दौड़ कैसे रहे थे?

उन में से एक ने कहा––––– '' पादरी महोदय हमने आपको अपनी पहली मुलाकात में ही बताया था कि जब भी हमें कोई चीज चाहिये होती है हम हाथ उपर कर भगवान से मांग लेते हैं। अभी भी हमने वही किया, हमने भगवान से कहा हमने पादरी महोदय के पास जाना है, दौड़ हम लेंगे नौका हमारे पास नहीं। आप कृपा करो व हम दौड़ने लग पड़े व अब आप के पास हैं।

पादरी ने हाथ जोड़ दिये, सिर झुका दिया और धीरे से बोला––––'' आप वही प्रार्थना करो जो पहले किया करते थे। मुझे पता लग गया है कि ईश्वर हृदय की आवाज सुनता है। उसे शब्दों या भाषा से कोई मतलव नहीं।''

*****

आज हमारे देश में स्वार्थी तत्वों ने जिन में यह गुरूकुलों व संस्कृत पढ़े लोग खास कर हमारे आर्य समाज वाले शामिल हैं ने योजना बध तरीके से एक बहुत बड़ा अन्धविश्वास लोगों में पैदा किया हुआ है कि ईश्वर संस्कृत में ही बात सुनता है। दुख की बात है कि जो संस्था अन्धविश्वासों से लड़ने के लिये बनाई गई थी वह खुद अन्धविश्वासों का सब से बड़ा गढ़ बन गई है।

जिस कारण पढ़े लिखे तबके ने आर्य समाजों में आना बिल्कुल बन्द कर दिया है।

ईश्वर कह रहा है मानव से

पास रहता हूं तेरे सदा मैं अरे,
तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूं ?
मूर्ख मृग की तरह भागे चारों दिशाओं में तू,
ऐसे में न तू देख पाये मुझे, तो मैं क्या करूं ?

कोसता दोष देता सदा तू मुझे,
मुझ को यह न दिया, मुझ को वो न दिया,
श्रेष्ठ मानव का चोला मैने तुझ को दिया,
सब्र तुझ को न आये तो मैं क्या करूं?

न कर पाप तू मानव अरे,
देता हूं आवाज, तेरे अन्तकरण में बैठा हुआ,
किन्तु तू विशयों में डूबा हुआ,
अमृत छोड़ विश पीये तो मैं क्या करूं?

जांच अच्छी बुरी वस्तु की तू कर सके
इसलिये बुद्धि मैने दी है तुझे।
किन्तु विशयों में डूबा, सीख मेरी भुला,
तू मस्ती में झूमें तो मैं क्या करूं?

फल फूल शाक मेवा आदि सभी,
स्वास्थयप्रद मधुर आहार तुझ को दिये।
इन्हें छोड़ अमल, मद मांस खाये,
तो तू ही बता, मैं क्या करूं?

अति मनोहर सरस भव्य द्रव्यों भरा,
विष्व सुन्दर प्रकाघ आदि मैने रचा,
अपनी करतूतों से इस स्वर्ग को,
नरक बनाता जाये तो मैं क्या करूं?

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।
जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें
पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English
कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद
0172–2662870, 9217970381

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)
Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

Whole Universe – A Fraternity

A woman, living in Vinoba's neighbourhood, went out for pilgrimage leaving her lone son in the guardianship of Vinoba's mother. Vinoba and neighbour son started living with great love and affection in one and the same house. Vinoba found some transformation in his mother's behavioral attitude. She used to serve butter oil laced bread to the neighbour's son and dry bread to Vinoba. One day he asked his mother the cause of this discrimination. Mother affectionately answered, "Son, you are my child but the other one is Bhagwan's child." Is not ittrue that the guest is known as Bhagwan? Some variation must be there between my own and Bhagwan's child. Vinoba was very much pleased to perceive such a wholehearted generosity of his mother.

Lesson: Love every creature. Generate such a whole hearted generosity that everyone seems to be our own and no one alien.

Dr O P. Setia

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

आत्म निरीक्षण

जितना जीवन में प्रार्थना का महत्व है उस से कहीं अधिक महत्व आत्म निरीक्षण का है। यह उसी तरह है जैसे की किसी मूर्तीकार ने दो घंटें पत्थर को तराशा हो उस के बाद वह देखने के लिये उत्सुक होगा कि तराशने का कितना प्रभाव पत्थर पर पड़ा है। अगर नहीं पड़ा तो उसे क्या करना चाहिये ताकी पत्थर उस हालत में आ जाये जब की उसे मूर्ती की शकल दी जा सके।

लगभग सभी धर्मो और साम्प्रदायों में काम, क्रोद्ध, लोभ, मोह और अंहकार को बुरा कहा है और अक्सर सभी यह प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु हमें इन पांचों बुराईयों से दूर रखे। हम आर्य समाजी भी विश्वानी देव सवित्र–––मन्त्र का पाठ रोज करते है। जिसका साधारण अर्थ है––––हे प्रभु हमें उन सभी बुराईयों से दूर रखें जो कि हम में पापपूर्ण प्रवृति की और ले जाती है। पर शायद ही हम यह निरिक्षण करते हैं कि इस प्रार्थना का कितना प्रभाव हमारी दिनर्चया या व्यवहार में है। यदि गलत काम करते समय हमारी आत्मा हमें टोक देती है और उस रास्ते से हटा देती है तब तो प्रार्थना का प्रभाव है वरना नहीं। इस में दो बातें हैं, एक तो अगाह करना, दूसरा उस रास्ते से अलग कर देना।

आत्म निरिक्षण का अर्थ है दिन मे कम से कम एक बार यह निरिक्षण करना कि क्या मेरा व्यवहार और आचरण मेरे द्वारा की जा रही प्रार्थना के अनुसार था और क्या मैं उन नियमों और सिद्धान्तों का पालन कर सका जिन को ग्रहण करने के लिये मैं रोजाना ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। यदि आप अपने आप को किसी गलत काम से बचा सके हैं तो मानिये आप की प्रार्थाना सफल है और यदि नही तो प्रार्थना में दृढ़ संकल्प की आवश्यकता हैं।

एक बार की बात है एक संस्था ने गरीब व्यक्तियों को कम्बल बांटने का निर्णय लिया । कम्बल ठीक व्यक्ति को ही मिले, इस लिये यह निर्णय लया गया कि रात को शहर में घूमा जायेगा, जो व्यक्ति भी बिना कम्बल के सोया मिले उसे कम्बल दे दिया जायेगा। एक व्यकित कड़कती सर्दी में फटे हुये खेस को ओढ़ा सोया हुआ था। व्यवस्थापको ने उसे कम्बल देने के लिये नींद से जगाया। उसने उनका धन्यबाद किया और कहा मुझ से कहीं अधिक आवश्यकता इस कम्बल की दूर बैठे उस व्यक्ति को है । मेरे पास खेस तो है पर उस के पास वह भी नहीं, इस लिये यह कम्बल उस व्यक्ति को दे दें। यह वही व्यक्ति कर सकता है जि समे लोभ खत्म हो गया हो। लोभ को शत्रु कहकर उसे खत्म करने के लिये प्रार्थना करना एक बात है परन्तु जीवन मे उस भिखारी की तरह लोभ के उपर विजय पालेना प्रार्थना की सफलता है।

जब हम एकान्त में बैठकर, ईश्वर स्तुती की आदत बना लेते हैं, तो आत्मनिरिक्षण का भी अवसर मिल जाता है । परन्तु ईश्वर भक्ति यदि मनोरंजन का साधन बन गया हो तो आत्म निरिक्षण सम्भव नहीं। आत्म निरिक्षण के लिये तो शांत वातावरण चाहिये।

*****

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

सम्पादकिय

लठमार होली का इतिहास जानें कैसे हम अपने भगवान तुल्य महापुरूषों को दिखातें हैं

होली के अवसर पर मथुरा के पास के कस्वों ––नन्दगांव और बरसाना में लठमार होली खेली जाती है। जैसे नाम ही बताता है , इस त्योहार पर स्त्रियों आदमियों की लठों से पिटाई करती है। हम इस में परेशान न हो क्योंकि हमारे हिन्दुओं के त्योहारों में धामिर्क भावना तो अब खत्म ही हो गई है, केवल ऐसी भददी हरकतें और मजाक ही रह गया है परन्तु दुख इस बात का है कि जो इस का इतिहास बताया जाता है वह श्री कृष्ण जिन्हें हम भगवान कह कर पूजा करते है उसमें उनको बहुत ही अशोभनिय रूप में बताते हैं।

कहते हैं होली के दिन भगवान कृष्ण अपने मित्रों के साथ अपनी प्रेमिका राधिका के गांव बरसाना जाते थे और उस से व उसकी सहेलियों के साथ छंड़खानी करते थे। उनकी इस हरकत के कारण नन्दगांव और बरसाना के लोग श्री कृश्ण और उनके मित्राों की डंडो से पिटाइ करते थे। जिन को हम भगवान कहते हैं उनके बारे में ऐसी अशोभनिय बातें लिखना कहां की बुद्विमता है। यही नही इसे हर साल मनाते हैं और इसे देखने हजारों की संखया में देश विदेश से लोग आते हैं। भगवान श्री कृष्ण तो दोष रहित थे परंतु अर हमारे पूजनिय जैसे की पिता है उन में कोई दोष हो भी तब भी हम उन के दोष की बात कभी नहीं करते , केवल उनकी अच्छाईयो की ही बात करते है, तभी वे पूजनिय रहेंगे।

यदि सचमुच आर ऐस ऐस और भाजपा हिन्दु धर्म की रक्षक है तो ऐसी घिनोनी हरकतों पर पावन्दगी लगायें। सब से बड़ी बात यह है कि कैसे कोई ऐसे हिन्दु धर्म पर गर्व कर सकता है जब हम अपने भगवान को लड़कियों को छेड़ने वाला बतायें।

आज हिन्दु धर्म एक महोल और खिलवाड़ बन कर रह गया है । कारण कोई भी पर्व हो उस में भक्ति, उपासना या फिर शान्त वातावरण में उस महान आत्मा जिस की याद में पर्व मनाया जाता है उस के गुणों को याद करने के स्थान पर एक धटिया मनोरंजन जिस में कि शोरगुल और नृत्य आदि होते हैं ने ले लिया है। हम मुसलमान, ईसाईयों और सिक्ख भाईयों के धार्मिक पर्व भी देखते है, कहीं भी ऐसा महोल देखने को नहीं मिलता। शांत भाव से आस्था और समर्पन देखने को मिलता है। इसका दूसरे लोग बहुत गलत फायदा ले रहें हैं। हिन्दु धर्म को ऐसा दर्शाया जाता है कि मानो इस में वासना ;मतवजपेउद्ध का मुख्य स्थान हों। हमारे धार्मिक पर्वो पर भीड़ इकठठी करने के लिये ऐसे कलाकारों को स्थान दिया जाता जो कि न तो हिन्दु होते हैं और न ही अच्छे आचरण के। यह बात किसी और मत या सर्म्पदाय में नहीं है।

मनोरंजन जीवन का महत्वपूर्ण अंग है पर उसका अपना स्थान है और उसको ईश्वर की भक्ति के साथ मिलाना बहुत गलत है।

सब से बड़ी बात––––श्री कृष्ण के जीवन में कोई राधिका नाम की स्त्री नहीं थी। वह कैसा जीवन जी रहे थे उसे जानने के लिये इसे पढ़े। श्री कृष्ण के बेअे का नाम प्रदयुमन था। एक बा रवह जब राजदरवार में आया तो मन्त्री सहित सभी राजदरवारी आदर में खडे हो गये।प्रदयुमन ने स्थान ग्रहण किया और मन्त्री और दूसरे वरिष्ठ व्यक्तियों से पूछा कि आपे क्यो हो गये, मैं कृष्ण नहीं अपितु उनका बेठा प्रदयुमन हूं। राजदरवारियों ने कहा कि आप और कृष्ण में कोई फर्क नजर नहीं आता। वैसा ही तेज आप में है।

राजदरवारियों ने श्री कृष्ण से पूछा––––महाराज आप का बेटा आप जैसा ही बचवान और तेजसवी कैसे है, तो श्री कृष्ण ने जवाब दिया। रूकमणी से शादी के बाद भी हम दोनों ने 12 वर्ष ब्रहमचर्य का पालन किया। हिमालय पर तपस्या की तब प्रदयुमन का जन्म हुआ। यह था श्री कृष्ण का चरित्र जिन्हें हम राधा के साथ जोडते है और वासना पूर्ण काल्पनिक कहानियां बनातें है।। यह हम हिन्दुओं के लिये शर्म की बात है।

अच्छा हो हम अपने महानपुरूषों को आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के लैंस से देखे।

*****

BJP needs to move from Mission 360+ to Mission save 150

Political situation changes very fast in India. In 80's of last century, Rajiv Gandhi's Congress party was reduced from +400 in 1984 to 154 in 1989 and the special feature of the party's dramatic fall was that everything went against Rajiv and the Congress party in its last year of rule, factors like Mandal , kamandal and Bofors all surfaced together.. Therefore, the BJP loyalists should not get upset if I say that in the changed scenario, manifested by its stunning losses in by-polls, party leadership should change its gear, and now goal should be save 150 and not 360+ which never looked realistic. In the last six months political situation from BJP's perspective has changed diagonally with PNB scam, Bank loot, agrarian distress, adverse effects of demonetization and half cooked GST, all coming together to haunt BJP. It's stand that Bank loot has been going on since Congress party's tenure, does not appeal since the Congress party has already paid price for it by losing power in 2014 with BJP using corruption as main issue against them. It is Mr Modi who **promised *Bhrashtachar mukt Bharat*** and four years was a long period for that. At least Banks should have been rid of that.

The point to be noted is that BJP due to its failure to come up to expectations, after making tall promises in 2014, is on a sticky wicket. Terrain ahead is hilly and coming back to the first gear will be the wise step. It will mean bye bye to Amit Shah and passing on the baton to some other matured leader, capable of bringing back those 20% BJP voters who have shunned it in the last four years. Second, party should give tickets to the persons with proven credentials, no more likes of Kirron kher. Mr Modi can no longer carry such on their shoulders.

Second, Varanasi is no more a safe seat for Modi. If Gorkhpur, which was with Yogi since 1989 can be wrested by opposion, then Varanasi which tradionally has not been with BJP is not beyond combined opposion's reach especially when people would vote with venegeance to teach arrgant BJP a lesson. I personally do not want Mr Modi to lose who without any doubt he is the tallest leader in the country. Defeat can affect his undisputed place as a leader in the party and there is no one to take his place. In last four years, he has reduced all other BJP leaders to the status of serviles.

Why I am keen that BJP concentrates on Save 150 mission because in the absence of any single party getting past +273 mark, BJP centric coalition is the best bet for the country and it can happen only when party manages to get minimum 150 seats. I want Modi but not Modism and once coalition is there Modism will get blunted.

We have seen many opportunistic alliances in last 28 years. They can win elections but can't stay together under some agreed programme. Once they are in power, self interests and egos come to the fore and national interest takes back seat. Therefore, I can opt for either Congress centric coalition or BJP centric coalition. The Congress party does not look prepared nor do they have the leader of Modi's stature. The least they could have done was not to defend likes of Lalu or Chidambaram's son Karthik. Law should be allowed to take its course.

Last, this country can progress only when we have less of agitations. For this it is the most appropriate time to say no to all type of reservations, subsidies, loan waivers and freebies. Any party which has the courage to adopt this policy will rule India after 2030. None of the present parties look like following this route.

सम्पादकिय

इस तरह तो हिन्दु धर्म के हजारों टुकड़े करने पड़गें

कर्नाटक सरकार द्वारा लिंगायत समुदाय को मुसलमान, ईसाई और सिक्खों की तरह एक अलग समुदाय का दर्जा देने का फैसला

सिद्वारमैया वाली कर्नाटक सरकार ने लिंगायत समुदाय को मुसलमान, ईसाई और सिक्खों की तरह ही एक अलग समुदाय का दर्जा देने का प्रस्ताव पास किया है। यह इस लिये किया जा रहा है क्योंकि लिंगायत समुदाय के कर्नाटक में 17 प्रतिशत आवादी है और उनका लगभग 100 सीटों पर बहुत प्रभाव है और खास बात यह है कि सिद्वारमैया के प्रतिद्वन्दी यदुरापा जो कि भाजपा द्वारा मनोनीत मुख्य मन्त्री है, लिंगायतो पर अच्छा प्रभाव है। उसी प्रभाव को कम करने के लिये सिद्वारमैया लिंगायत वर्ग विभाजन करना चाहते है । खैर यह तो यह राजनैतिक पहलु। मैं पहले भी बहुत बार लिख चुका हूं कि भारत में जो लोकतन्त्र प्रथा है यह लोकतन्त्र का एक बिगड़ा हुआ रूप है जिस में वोटों के लिये हमारे नेता कुछ भी कर सकते है।

अब हम आते है दूसरे पहलू पर, यह पहलु है कि क्या हम हिन्दुओं के किसी भी वर्ग को यह कहने पर कि उनका ईश्वर को मानने का ढंग अलग है इस लिये उन्हें मुख्य हिन्दु धर्म से अलग अल्पसंख्य समुदाय घोषित किया जाये? मेरा मानना है कि यदि हम ऐसा करना आरम्भ कर देते हैं तो हिन्दुं धर्म से ही हजारों अल्पसंख्य समुदाय निकल कर हिन्दुओं से अलग हो जायेंगे। कारण न तो हिन्दु दूसरे सर्म्पदायों जैसे कि ईसाई, इस्लाम, बोद्ध की तरह किसी एक ईश्वर या भगवान को मानते हैं, न ही हमारा ईश्वर उपासना पूजा पाठ का ढंग एक है, न ही हमारी धार्मिक पुस्तकें एक है, न ही मरने के बाद क्रिया क्रम का ढंग एक है। हमारे हिन्दु धर्म में हजारों तो भगवान है, सैंकड़ों ढंग से पूजा का विधान है और सेंकड़ों हमारी ईश्वर से जोड़ने वाली पुस्तकें है कोई दफना रहा है तो कोई जला रहा है, कोई गाय को माता मानता है तो कोई इसे खाता भी है।

दूसरा प्रश्न यह है कि यह फैसला करने का अधिकार किस को है, हिन्दु धर्म सांसद को , न्यायालय को या फिर शासन कर रही राजनैतिक पार्टी को। यदि शासन कर रही पार्टी को तो प्रांतिय पार्टी को या फिर केंद्रिय सरकार को।

दूसरे धर्मो की तरह हमारी कोई धर्म सांसद तो है नहीं जो कि यह फैसला करे। हाल यह है कि हम हिन्दुओं में तो किसी ने इस का विरोद्ध भी नहीं किया। कोई जाता है तो जाये। यही कुछ दलितो के साथ होता है जब वह हिन्दु धर्म से बाहर निकलने की बात करते है। वैसे यह नारा सुनने में बहुत आता है, गर्व से कहो हम हिन्दु है। जो यह नारा देते हैं वे बताये तो सही कि वे जिस हिन्दु की वे बात करते हैं वह हिन्दु है कौन, कौन उनके भगवान है, क्या उनकी धामिर्क पुस्तके हैं। किसकी पूजा करनी है और किसकी नहीं, क्या नहीं खाना है।

जो हमारे हिन्दु ऐक्ट में हिन्दु की परिभाषा की गई है ———यानी जो भी मुसलमान, ईसाई या पारसी नहीं वह हिन्दु हैं यह तो विवाह शादी, जायदाद के बटवारे और बच्चा ओद लेने के लिये है,, धर्म की पहचान के लिये मान्य नहीं। कारण सिक्ख, बोद्ध, जैनी तो पहले ही अपने आप को हिन्दु धर्म से अलग मानने का ऐलान कर चुके हैं।

अच्छा होगा हिन्दु धर्म सांसद की स्थापना हो जो कि इन सब पहलुओं पर विचार करे। लिंगायत जो कि अलग धार्मिक पहचान की बात कर रहें है वे 12वी सदी के समाज सुधारक बासावना को मानने वाले हैं। उन्होने लगभग वही बाते कही जो बाकी समाज सुधारकों जैसे गुरू नानक देव व स्वामी दयानन्द ने कही————जैसे कि जाति जन्म से नहीं , कर्म से होनी चाहिये, स्त्री पुरूष के सामान है, ईश्वर निराकार है, बासावना ने भी मूर्ती पूजा का खण्डन किया और स्वामी दयान्नद की तरह जिस शिव की उन्होने बात की वह निराकार शिव है——अर्थात जो कल्याणकारी है। हां उनके एक वर्ग के अनुसार बासावना ने वेदों को न मानने की बात की। इन्ही सब बातों को देखें तो कल को आर्य समाजी भी कहेंगे ———हमें भी अल्पसंख्यक धर्म का दर्जा मिलना चाहिये। और देखते ही देखते हजारों हजारों अलग धर्म बन जायेंगे।

हां ऐक बात अवश्य है कि किसी भी राजनैतिक पार्टी को इसका फैसला लेने का अधिकार देना गलत है। हमारे राजनेता तोड़ तो सकते हैं पर जोड़ नहीं सकते ।

*****

Behind each problem, there is a means to surmount it, too.

Often, the most trivial matter can make us dejected. We must gather enough strength to overcome it and move ahead. While taking the path to success, we must face the obstacles we encounter with a smile and forge ahead. We must never give in to despair. If we do so, we won't succeed.

A man started his own business and incurred a huge loss. In order to offset the loss, he borrowed money and continued his business. Even then, he failed. Deep in debt, the man decided to end his life, and walked to the beach. Having decided to jump into the sea after dark, he sat down on a boulder. He then noticed some children playing. They were building temples and castles using wet sand. They fashioned various forms according to their fancy. After they had finished building their temples, castles and other edifices, they would stand back to admire their own handiwork

From time to time, their creations would be washed away by waves. Seeing this, the children would clap gleefully and laugh joyfully. When the waves retreated, the children would once again run forward to create new sculptures. The very next moment, waves would wipe clean all their work. Seeing this, the children would squeal in joy and flee the waves. And then, they would return and begin their work yet again.

In a second or two, the waves would wash away what had taken them considerable time to make. The children would enjoy watching the undoing of all their efforts with the same attitude with which they had admired their creations earlier. The man watched all this with great wonder. He saw how much the children appreciated each sculpture they erected, and at the same time, how they did not lose heart when the sculptures were washed away. Actually, every loss inspired the children to create their next sculpture.

The man, who had earlier decided to end his life, thought, "After facing just one setback, I was ready to end my life. What a pity I don't have as much expansiveness of mind as these children! Instead of wallowing in defeat, they remain joyous always. This is a lesson one ought to learn and share with others."

Reflecting thus, the man gave up his plan to kill himself, and resolved to continue striving harder. The point here is not that one should rejoice in loss, but that one should not despair even when faced with defeat.

When we encounter problems in life, we must not allow them to overwhelm us. Behind each problem, there is a means to surmount it, too. Understanding this, we must continue striving. We must regard the obstacles as consequences of actions done in a past life. Or, we could empower the mind to accept whatever happens as God's will. Only then can we move ahead. If not, we won't find even one trouble-free moment in life.

The waves of life will wash away our efforts and their results. Nevertheless, we must not despair or retreat. Instead, we must try even harder to move ahead.

It is enough if we have this attitude. We will then be able to move ahead without giving in to despair. Our lives will then be beneficial to others as well.

*****

चिन्तामुक्त जीने का तारीका

1 बीती जो जा चुकी उस की फिकर मत कर
बाकी जो रह गई उस को सुधार ले।।

उपनिशद कहते हैं हिम्मती लोग वही हैं जो वर्तमान में जीते हैं और कायर वे हें जो भविश्य की चिन्ता के कारण हमेशा दुखी रहते हैं। बहुत से लोग जीवन का आनन्द इसलिए नहीं उठा पाते, क्योकिं वे हमेशा भविष्य की चिंता करते रहते हैं। यह उसी तरह है जैसे कि अगर हम अपनी छाया को पकड़ने की कोशिश करते हैं तो आगे बड़ने पर छाया भी आगे बड़ जाती है। इस प्रकार हमारा सम्पूर्ण
जीवन व्यर्थ का संघर्ष बन कर रह जाता हैं।
वर्तमान का आनन्द हम उठाते नहीं है व भविष्य की चिन्ता से अपने आप को घेरे रखते हैं।

2 जो कार्य आप को सब से मुश्किल लगता है उसे सब से पहले करें।

3 हर समस्या के कई रास्ते हैं, उस रास्ते कां भूल जाइये जो आप के लिये बन्द है। अक्सर हम उसी रास्ते के बारे में सोचते रहते हैं जो हमारे लिये बन्द होता है। न ही उस रास्ते को अखतियार करें जो आपके मन की शान्ति को भंग कर दे।

4 जब आप क्रोद्धित हो जाते हैं, तो आपका रास्ता और कठिनाई भरा हो जाता है व कार्य को पूरा करने के लिये जो शक्ति चाहिये उसे नष्ट कर बैठते हैं। इसलिये क्रोद्धित होने से बचें।

5 हर हालत में अपना खर्चा, कमाई से कम रखें। यह बिल्कुल सम्भव है।

6 जो हमें मिला है उसके लिये धन्यवादी रहे। शिकायत व अपेक्षा का रूख न अपनायें।

7 सत्य से बढ़कर कोई और चीज मन को शान्ति नहीं देती, झूठ मन की शान्ति को खत्म कर देता है। इसलिए सत्य का ही आचरण करें।

तीन प्रकार से परस्पर प्रेम बढ़ता है

एक दूसरे का सत्कार करने से,
सभा में दूसरों के लिये स्थान रिक्त करने से,
दूसरे को आदरभाव व ठीक नाम से पुकारने सें

स्वास्थ्य विकास

1 बिमारी से बचना है तो बदपरहेजी से बचें,
परेशानी से बचना है तो बईमानी से बचें,
सन्ताप से बचना है तो पाप से बचें,
2 क्रोध विवके का नाश करता है,
स्वार्थ से समाज का नाश होता है,
गुटबन्दी से संस्थाओं का नाश होता है

*****

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Kaira do bhanu Dhiman and Renu sharma celebrating their birthday in slum school

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

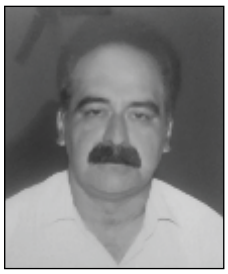

Anil kaura

Gian Muni

Gian Muni

Kewal Puri

Luxmi Devi Tuli mo Saroj Bala

Pushpa

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in